प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 10 * JUN 2007 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Voice - 1	42				भ०गीता०-अ०२/३०:देह-देही विभाग, स्थू०सू०का०शरीर निरूपण, जीव-ईश्वर एकत्वम्	
2	Voice – 2	32				राम-१ : भ० राम का नर अवतार द्वारा शिक्षा और उपदेश	
3	Voice – 3	*42*				भ०गीता०-अ०२/३० : ज्ञान काण्ड	g
4	Voice – 4	34				राम-२ : भ०राम का नर अवतार द्वारा शिक्षा और उपदेश सीता हरण प्रसंग कथा	
5	Voice – 5	39				भ०गीता०-अ०२/३० : देह-देही विभाग शरीरोपनिषद	
6	Voice – 6	30				राम-३ : पंचवटी में सीता हरण का प्रसंग एवं राम विलाप	
7	Voice – 7	*31*				भ०गीता०-अ०२/३० : ज्ञान काण्ड, संग भ्रान्ति	h
8	Voice – 8	31				राम-४ : राम विलाप, अगस्त्य मुनि से भेंट एवं उनके द्वारा रामजी को सांत्वना	
9	Voice – 9	30				भ०गीता०-अ०२/३०, ३१, ३२ : स्वधर्म	1
10	Voice – 10	00				संपूर्ण प्रवचन अनुपलब्ध	NA
11	Voice – 11	31				भ०गीता०-अ०२/३१ - ३८ : स्वधर्म	2
12	Voice – 12	27				राम-५ : सीताजी की खोज, शबरी से भेंट, नवधा भक्ति	
13	Voice – 13	*38*				भ०गीता०-अ०२/३८ - ४६ : कर्मयोग-१	a
14	Voice – 14	30				राम-६ : भ०राम की नरलीला, सीताहरण के पश्चात जटायु से भेंट, सुग्रीव से मित्रता	
15	Voice – 15	*30*		कक्षासामग्री		दृग-दृश्य विवेक दृग अविनाशी नित्य चेतन व दृश्य अनित्य जड़ दुःख रूप माया है	Imp
16	Voice – 16	29				राम-७ : बाली वध एवं तारा को भ०राम द्वारा आत्म ज्ञान का उपदेश	
17	Voice – 17	36				भ०गीता०-अ०२/३८ + ४७, ४८ : कर्मयोग-२	b
18	Voice – 18	29				राम-८ : भ०राम का नररूप में धराधाम में अवतार का प्रयोजन - मनुष्य को उपदेश	
19	Voice – 19	37				भ०गीता०-अ०२/३८,३९ + ४७-५० व अ०५/१६: कर्मयोग-३	c
20	Voice – 20	28				राम-९ : रामायण का प्रयोजन - सत्यमेव जयते	
21	Voice – 21	*31*				भ०गीता०-अ०२/४९,५० + ५१-५९ : सॉंख्य योग १ - स्थित प्रज्ञ के लक्षण	1
22	Voice – 22	28				राम-१० : रावण वध, सीताजी की अग्नि परीक्षा, अयोध्या आगमन व भरत मिलाप	
23	Voice – 23	*35*				भ०गीता०-अ०२/५५ : सॉंख्य योग २ - स्थित प्रज्ञ के लक्षण	2
24	Voice – 24	31				राम-११ : अद्‌भुत रामायण, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज संवाद	
25	Voice – 25	00				संपूर्ण प्रवचन अनुपलब्ध	NA
26	Voice – 26	30				राम-१२ : भ०राम ही सच्चिदानंद ब्रह्म व माया के अध्ष्ठिान हैं	Imp
27	Voice – 27	*35*		विशेष		भ०गीता०-अ०२/५४, ५५ : सॉंख्य योग ३	3
28	Voice – 28	*30*				राम-१३ : सियाराममय सब जग जानी । करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।	
29	Voice – 29	52				भ०गीता०-अ०२/५४, ५५ : सॉंख्य योग ४	4
30	Voice – 30	29				राम-१४ :सीताराम जगत के मातापिता हैं,नि०नि०ब्रह्म का स०सा०रूप ही यह जगत है	